

POST GRADUATE CERTIFICATE IN
BENGALI - HINDI TRANSLATION
PROGRAMME
(PGCBHT)

00473

सत्रांत परीक्षा

जून, 2011

एम.टी.टी.-002 : बांग्ला-हिन्दी अनुवाद :
तुलना और पुनर्सृजन

समय : 3 घंटा

अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. किन्हीं दो का उत्तर लगभग 300 शब्दों में दीजिए। $2 \times 10 = 20$
 - (a) बांग्ला और हिंदी के बीच के संबंध सूत्रों पर प्रकाश डालिए।
 - (b) बांग्ला और हिंदी की लिंग व्यवस्था में अंतर पर प्रकाश डालिए।
 - (b) हिंदी एवं बांग्ला मुहावरों की प्रकृति के साम्य-वैषम्य का विवेचन कीजिए।
2. निम्नलिखित बांग्ला शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए। 5

এটা	ওখানে
তখনই	অল্পবিস্তর
জবা	আকন্দ
ঝাল	বিউনি
ভাসুর	কনে।

3. निम्नलिखित हिंदी शब्दों का बांग्ला पर्याय लिखिए।

5

थोड़ा	रिश्तेदार
बल्कि	बावजूद
करीब	कूछ
इस तरह	सही
बचपन	बरतना

4. निम्नलिखित कहावतों-मुहावरों में से किन्हीं पाँच का हिंदी अनुवाद करते हुए उनका वाक्य में प्रयोग करें। 10

- অরণ্যে রোদন
- কোন মুখে
- এক টিলে দুই পাখী মারা
- পথের কাঁটা
- চাঁদ ধরতে যাওয়া
- কত ধানে কত চাল
- এক গাছের বাকল আর এক গাছে লাগে ?
- উল্টে চোর গেরছকে বাঁধে
- চোর পালালে বুদ্ধি বাড়ে
- প্রাণ খুলে

5. निम्नलिखित अंशों में से किन्हीं तीन के हिंदी में अनुवाद कीजिए।

3x15=45

(a) मानुषेर हृदय छड़िये आछे, मिलिये आछे, पृथिवीर आलोय छायाय - तार गङ्के, तार गाने। अतीत कालेर संख्यातीत मानुषेर प्रेमे पृथिवी येन ओड़ना उड़िये आछे ; बायूमणुले येमन तार वास्पर उठरीय, ए तेमनि तार चिन्मय आवरन ; एर मध्य दिये मानुष रओ पाय, सुर पाय, आपनि चिरन्तन मनेर। तई यखन शुनि आमामेदेर प्राचीन पूर्वपुरुषदेर समयेओ 'आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमालिंष्टि सानु' देखा येत, तखन आपनादेर मध्ये सेई पूर्वपुरुषदेर चित्त अनुभव करि, ताँदेर सेई मेघ देखार सुख आमामेदेर सुखेर सङ्गे युक्त हय ; बुवाते पारि, यारा गेछेन ताँराओ आछेन।

विजने अरणेर वृक्ष नितान्त शून्य, किन्तु ये वृक्षेर दिके एकजन मानुष चेयेछे से वृक्षे से मानुषेर चाहनि छाप दिये गेछे। बहुदिन थेके ये गाछेर तलाय रौद्रेर बेलाय मानुष बसे, से गछे येमन हरिंबर्ण आछे तेमनि मनुष्यत्वेर अंश आछे। आमामेदेर सेई पूर्वपुरुषेर नेद्रेर आभा आमामेदेर स्वदेश आकाशेर तारकार ज्योतिते प्रतिफलित। स्वदेशेर विजने आमामेदेर शतसहस्र सङ्कीर बास, स्वदेशे आमामेदेर शतसहस्र बंसर परमायु।

(b) কিছুদিন আগে বীরসিংহ গ্রামে ঈশ্বরচন্দ্রের বাড়িতে বড় রকম একটা ডাকাতি হয়ে গেছে। ডাকাতরা কারুক প্রাণে মারতে পারেনি কিন্তু জিনিসপত্র নিয় গেছে সবই। এমনিই অবস্থা যে পরদিন থালা বাটি, হাঁড়িকুড়ি কিনে না আনলে ভাত খাওয়ারও উপায় নেই।

ঈশ্বরচন্দ্র সেই সময় গ্রামের বাড়িতেই ছিলেন। প্রায় চল্লিশ পঞ্চাশজন দস্যু মধ্যরাত্রে অকস্মাৎ মশাল ও বর্শা হাতে নিয়ে আক্রমণ করায় ঈশ্বরচন্দ্র বৃদ্ধ পিতামাতাকে ও বাড়ীর অন্য লোকজনদের সরিয়ে দিয়েছিলেন। কিন্তু নিজে প্রস্তুত রইলেন ডাকাতদের মোকাবিলা করার জন্য। কিন্তু হট্টগোল শুনেও গ্রামবাসীরা ডাকাতদের প্রতিরোধ করার জন্য এগিয়ে আসেনি, একা ঈশ্বরচন্দ্র কী করবেন। বাড়ির লোকেরা সবাই ঈশ্বরচন্দ্র কে পলায়ন করবার জন্য পীড়াপীড়ি করতে লাগলো, কিন্তু এ গোঁয়ার ব্রাহ্মণ একবার জেদ ধরলে সহজে ছাড়বে না। তখন ঈশ্বরচন্দ্রের পত্নী দীনময়ী দেবী তিন বৎসরের পুত্র নারায়ণচন্দ্রকে কোলে নিয়ে সদরের কাছে বসে পড়ে বললেন, তবে আমিও থাকবো। ডাকাতরা এসে আগে আমার ছেলেকে মারুক, কাটুক, তারপর তারা আপনার গায়ে হাত দেবে। পরিবারের নির্বন্ধে তখন ঈশ্বরচন্দ্রকেও খিড়কির দোর দিয়ে গৃহত্যাগ করতে হয়ছিল।

(c) এই ঘটনার পর আট বছর অতিক্রান্ত। সেদিনওছিল ১৪ মে। সাহেব এক অজানা কারণে অত্যন্ত কাতর। তার ষষ্ঠ ইন্দ্রিয় বলছে বিপদ আসন্ন। সময় গড়িয়ে যায় তখন রাত সাড়ে এগারটা। আর আধ ঘণ্টা গেলেই বিপন্নুক্ত হবেন তিনি সেবারের মতো। ভীষণ গরম মেমসাহেব ও বাড়ির অন্যান্যরা ঘুরে বেড়াচ্ছেন। বারোটা বাজতে মিনিট দশেক বাকি। হঠাৎ এক গোলমালের শব্দ শোনা যায়। স্ত্রী লোকের কান্না। সাহেব নিচে নেমে আসেন। সাহেবের বাবুটির স্ত্রী ফিরোজা সাহেবের পায়ে লুটিয়ে পড়ে বলতে থাকে, “খোদাবন্দ রক্ষা করুন, আমার স্বামী ছোরা লইয়া আমায় খুন করিতে আসিতেছে, ওই দেখুন, ওই।” দুবৃত্ত বাবুটি ছোরা হাতে স্ত্রীকে খুন করার উদ্দেশ্যে সাহেবের কাছে ছুটে আসে। সাহেব অন্য চাকরদের ডেকে আদেশ দেয় - “হতভাগাকে আজ আস্তাবলে বন্ধ করিয়া রাখ। কাল পুলিশে দেবা।” এইকথা সূনে সে সমূলে তীক্ষ্ণধার ছোরাটি সাহেবের বক্ষস্থলে বসিয়ে দেয়। অনতিবিলম্বেই রিচার্ড সাহেবের মৃত্যু হয়। বালিকার ভবিষ্যদ্বাণী সত্য হয়। নিয়তি অখণ্ডনীয়।

(d) শিলং পাহাড়ের নৈসর্গিক শোভা অতীব সুন্দর। জলবায়ু মনোরম। শীতে যেমন বরফ পড়েনা - গ্রীষ্মে তেমনই আধিক্য নেই গরমের। বসন্তের পরশ মেলে শীতের দিনগুলিতে, আর বর্ষায় মেঘেরা লুকোচুরি খেলে পাইনের সাথে - তেমনই বর্ষায় জলপ্রপাতগুলি মাধুর্য বাড়ায় শিলং পাহাড়ের। বেড়াবার মনোরম সময় মার্চ

থেকে জুন। অবার অক্টোবর-নভেম্বর। তবে সারা বছরই যাওয়া যায় শিলং পাহাড়ে। কবিগুরু রবীন্দ্রনাথের নানান স্মৃতি জড়িয়ে রয়েছে শিলং পাহাড়ে। শেষের কবিতার যন্ত্র সংঘর্ষও ঘটে এই শিলং পাহাড়ে। রিবংএ পাইনে ছাওয়া রবীন্দ্রনাথের বসত বাটি মালঞ্চ আজও অতীত রোমছুন করায়। বিধানচন্দ্র রায়েরও খুব-প্রিয় জায়গা ছিল এই সুন্দর সবুজ পাহাড়। স্বাধীনতার পর তৎকালীন পূর্বপাকিস্তান অধুনা বাংলাদেশ থেকে আগত বাঙ্গালিদেরও বিশেষ ভূমিকা আছে শিলং এর নগরজীবনে। শিলং এর হাটে বাজারে বাংলা ভাষার প্রচলন আছে। তাছাড়া হিন্দী ভাষাও খুবই জনপ্রিয়। শিলং থেকে ক্রমশঃ সুন্দরী পাইন, ফার আজ বিদায় নিচ্ছে - গড়ে উঠছে নতুন নতুন আকাশচুম্বি অট্টালিকা, আধুনিকতা গ্রাস করছে পাহাড়ের প্রকৃতি ও তার সৌন্দর্যকে।

- (e) যান্ত্রিক কণ্ঠস্বর বলে চলল - “মহাকাশযানের ভিতরে একটি টেবিল ছাড়া আর কোন আসবাব নেই। সেই টেবিলের উপর একটি স্বচ্ছ আচ্ছাদনের নিচে যে বস্তুটি রয়েছে, তাতেই পাওয়া যাবে চারটি সমস্যার সমাধান ও পৃথিবীর গত পঁয়ষট্টি বছরের ইতিহাস। তোমাদের মধ্যে থেকে যে কোন একজন প্রবেশদ্বার দিয়ে ঢুকে আচ্ছাদন তুলে বস্তুটিকে নিয়ে বেরিয়ে আসামাত্র মহাকাশযানে ফিরতি পথে রওনা দেবে। তবে মনে

রেখো, সমাধানগুলি সমগ্র মানবজাতির মঙ্গলের জন্য; এই বস্তুটি যদি কোনো স্বার্থপার ব্যক্তির হাতে পড়ে তাহলে -”

কন্ঠস্বর থেমে গেল।

কারণ কথার মাঝখানেই চোখের পলকে আমাদের সকলের অজান্তে অন্ধকার থেকে একটি মানুষ বেরিয়ে এসে তীরবেগে মহাকাশযানে প্রবেশ করে, আবার ততক্ষণে বেরিয়ে এসে অন্ধকারে মিলিয়ে গেছে।

6. निम्नलिखित में किसी एक का बांग्ला में अनुवाद कीजिए। 15

(a) दादी माँ अनेक मामलों में बहुत कठोर थी। गाँव की गरीब महिलाओं को ही सूद पर रुपएँ दिया करती थी, पुरुषों को कम। सूदवालों का जैसा व्यवहार होता है, वे भी कहती थीं कि अच्छा सूद तो दे दो, मूलधन बाद में देना एकदिन एक औरत पर बिगड़ रही थीं कि हट-हट दूर हट। मैं अभी नहा धोकर आ रही हूँ। आ गई पैसे माँगने, वह अपना रोना रोने लगी और कहने लगी कि मालकिन क्या करू, इस बार की पैदावार अच्छी नहीं हुई। तीन चार दिन बाद मेरी लड़की की शादी है मैं तो रुपए माँगने आई थी आपसे। दादी माँ ने कहा— बड़ी ठस है, सूद नहीं देती और रुपए माँगने आ जाती है। जब वह औरत जाने लगी तो दादी माँ ने कहा— रुक! रुक! तुमने तो कहा है लड़की की शादी है न। उसने कहा कि— हाँ मालकिन है लड़की की। दादी ने कहा कि तुमने पहले

क्यों नहीं कहा कि तेरी लड़की की शादी है। मैंने तो सोचा कि लड़के की शादी है। गाँव की लड़की की शादी है बोल कितना रुपया चाहती है। यही कोई बीस-पचीस। दादी माँ ने रुपय देते हुए कहा कि ये ले बीस-पचीस, लड़की की शादी में कसर मत करना और जरूरत हो तो ले जाना। दादी माँ का यह रूप हमेशा याद रहा है मुझे।

- (b) थोड़े दिनों बाद जिलाधीस देहात का दौरा करने आये। उसके बाद परगना हाकिम दौरे पर आये। अधिकारी पहले भी देहाती क्षेत्रों में दौरे पर आते थे, पर वे पाँच-सात मील दूर एक बड़े कस्बे में डेरा डालते थे, जहाँ पर थाना और प्रखंड विकास कार्यालय है। किन्तु जब पक्की सड़क बन गई और बाकायदे उसका उद्घाटन भी मंत्री महोदय कर गए, तो अब की बार दौरे के प्रोग्राम में सहतू के गाँव का छोटा कस्बा भी पड़ गया। अधिकारी और परगनाधीश का कैंप लगा तो और अधिकारी भी उनके साथ आए। जिलाधिकारी कोई सैर-सपोट के लिए गाँव देहात नहीं आता, उनका दुःख-सुख सुनने और मुकदमों का फैसला करने आता है, जिससे गाँववालों को सुविधा प्राप्त हो। इसलिए जिला अधिकारी के साथ पुलिस के अधिकारी, सिपाही, पेशकार, अहलमद, अर्दली आदि तो आए ही, वकील भी आए। अधिकारियों की अदालत में मुकदमा हो। और वकील न आए; गवाह और पेशकार न आए, यह संभव नहीं है।